बिल्वाष्टकम्

श्लोक १

[बिल्ववृक्ष के पत्तों के] तीन दल होते हैं।
वे तीन गुणों,
भगवान शिव के तीन नेत्रों और उनके तीन आयुधों [अस्त्र-शस्त्रों] को दर्शाते हैं।
भगवान शिव को एक ही बिल्व पत्र अर्पित करने से
तीन जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

श्लोक २

सुन्दर, सुकोमल, छिद्ररहित और तीन शाखाओं वाला
एक बिल्वपत्र अर्पित कर मैं भगवान शिव की पूजा करूँगा।

श्लोक ३

जो अखण्डित बिल्वपत्र द्वारा
नन्दिकेश्वर [नन्दी के स्वामी] भगवान शिव की पूजा करते हैं
उनके समस्त पापों की शुद्धि हो जाती है।
अतः भगवान शिव को एक बिल्वपत्र अर्पण करें।

श्लोक ४

भगवान शिव को एक बिल्वपत्र अर्पित करने से
सोमयज्ञ के महापुण्य की प्राप्ति होती है।
तो फिर पुण्य अर्जित करने हेतु
ब्राह्मणों को दुर्लभ शालिग्राम शिला क्यों अर्पित करें?

श्लोक ५

भगवान शिव को किया गया एक बिल्वपत्र का अर्पण,
कोटि सहस्र हाथी अर्पित करने,
सौ वाजपेय यज्ञों [राजाओं द्वारा किए गए यज्ञों],
और करोड़ों कन्याओं के महादान के समान है।

श्लोक ६

बिल्ववृक्ष देवी लक्ष्मी की देह से उत्पन्न होता है
और यह महादेव को प्रिय है।
अतः भगवान शिव को एक बिल्वपत्र अर्पण करें।

श्लोक ७

बिल्ववृक्ष के दर्शन या उसका स्पर्श,
घोर से घोर पापों का नाश कर देता है।
अतः भगवान शिव को एक बिल्वपत्र अर्पण करें।

श्लोक ८

[बिल्ववृक्ष] का मूल भाग ब्रह्मरूप है,
इसका मध्य भाग विष्णुरूप है और अग्र भाग शिवरूप है।
अतः भगवान शिव को एक बिल्वपत्र अर्पण करें।

श्लोक ९

बिल्वपत्र विषयक इन आठ पदों [बिल्वाष्टकम्] के पाठ का पुण्यफल है,
शिव के सान्निध्य की प्राप्ति, शिवलोक की प्राप्ति और सर्वपापों से मुक्ति।

अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

[ऑडिओ रिकॉर्डिंग]
श्री मुक्तानन्द आश्रम की संगीत मण्डली द्वारा गाया गया।
© ℗ २०११ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।
कृपया इसे कॉपी न करें, रिकॉर्ड न करें और इसका वितरण न करें।

भगवान शिव के लोक में प्रवेश

परिचय : एलिज़ाबेथ ग्रिमबर्गन

भगवान शिव की आराधना वैदिक काल से ही की जाती रही है। वस्तुतः, पुरातत्त्ववेत्ताओं को खुदाई में मिला सबसे पहला शिवलिंग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है। लिंग उस स्तम्भ का, उस ब्रह्माण्डीय अग्निस्तम्भ का प्रतीक है जिसका न कोई आदि है, न अन्त और ऐसी मान्यता है कि इसी से भगवान शिव का प्राकट्य हुआ। जिस निराकार, अनन्त स्रोत से समस्त सृष्टि का प्रादुर्भाव होता है और जिसमें उसका विलय हो जाता है, उसी का प्रतीक माने जाने वाले शिवलिंग का पिण्डाकार, लौकिक व पारमेश्वरी सत्ता को एक-दूसरे से जोड़ता है। जैसा कि हम जानते हैं, इसे प्रायः भगवान शिव व भगवती शक्ति [या पार्वती] के मिलन की अनन्त सृजनात्मक शक्ति के प्रतीक रूप में भी माना जाता है जो सतत ब्रह्माण्ड की रचना करती रहती है।

जहाँ एक ओर भगवान शिव को प्रायः परम सामर्थ्यशाली संहारक शक्ति के रूप में दर्शाया जाता है, वहीं उन्हें अपनी अनुकम्पा के लिए भी जाना जाता है। शिवपुराण में आराधना के वे उपाय बताए गए हैं जिनसे भगवान शिव प्रसन्न होते हैं। इनमें प्रमुख है, शिवलिंग के रूप में भगवान शिव का अभिषेक करना और उन्हें बिल्वपत्र चढ़ाना।

बिल्ववृक्ष भारत में पाया जाने वाला वृक्ष है और हिमालय के तराई के इलाके में पाया जाता है। सदियों से, इस वृक्ष के पत्तों, तनों व फलों को उनके औषधीय गुणों के लिए बहुमूल्य माना जाता रहा है। ऐसा भी कहा जाता है कि यह वृक्ष भगवान शिव को बहुत प्रिय है। शिवपुराण में तो वास्तव में इसे भगवान शिव का साक्षात् स्वरूप माना गया है। अन्य पुराणों में ऐसा कहा गया है कि यह वृक्ष भगवान शिव की अर्धांगिनी, देवी पार्वती के स्वेद-बिन्दुओं से उत्पन्न हुआ। अन्य और भी कथाओं में ऐसा वर्णन मिलता है कि यह देवी लक्ष्मी की देह से उत्पन्न हुआ, जैसा कि उपर्युक्त बिल्वाष्टकम् स्तोत्र में वर्णित है।

बिल्वाष्टकम् की रचना महान ऋषि आदि शंकराचार्य ने की थी। इस स्तोत्र में भगवान शिव को एक बिल्वपत्र चढ़ाने की महिमा का वर्णन किया गया है और इसे प्रायः भगवान को बिल्वपत्र की सादी-सी भेंट अर्पित करते समय गाया जाता है। ऐसा नहीं कि केवल बिल्ववृक्ष को ही भगवान का निवास-स्थान माना जाता है, बल्कि तीन पत्तियों के एक-साथ जुड़े हुए इनके आकार को भी दैवी प्रतीक माना जाता है। इस स्तोत्र के पहले श्लोक में यह बताया गया है कि बिल्वपत्र का आकार द्योतक है, तीन गुणों [सत्त्व, रजस् और तमस्] का; भगवान शिव के तीन नेत्रों का और उनके अस्त्र, त्रिशूल के तीन शूलों का। अन्तिम श्लोक में, इन्हीं तीन पत्तियों पर पुनः बल देते हुए बताया गया है

कि स्वयं बिल्वपत्र में दिव्यता के तीन पहलू समाहित हैं जो सृष्टि, स्थिति व संहार [ब्रह्मा, विष्णु, शिव] को दर्शाते हैं।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द ने स्तोत्र के इस संस्करण के लिए संगीत-रचना की है और इसे श्री मुक्तानन्द आश्रम की संगीत मण्डली द्वारा गाया गया है। राग दरबारी कानडा में संगीतबद्ध यह रचना, गहन प्रशान्ति व भगवान शिव के प्रति भक्तिभाव को जाग्रत करती है।

यह सोचकर कितना आश्चर्य होता है कि पृथ्वी पर इतनी बहुमूल्य निधियाँ होने पर भी जो वस्तु भगवान शिव को सबसे अधिक प्रसन्न करती है, वह है बस एक सामान्य-सी पत्ती—एक ऐसी पत्ती जो इतनी मंगलमय, इतनी पावन है कि वह भगवान की अनन्त सदाशयता का आवाहन कर सकती है। महाशिवरात्रि के महोत्सव पर हर वर्ष, भारत भर में और सिद्धयोग पथ पर सुनाई जाने वाली, शिकारी और हिरन की कहानी में भगवान की अनुकम्पा की गहराई स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। शिवपुराण की इस कहानी में बताया गया है कि महाशिवरात्रि के दौरान, शिकार की प्रतीक्षा करते हुए एक शिकारी अनजाने में ही एक बिल्ववृक्ष पर आश्रय ले लेता है। इस वृक्ष के नीचे एक शिवलिंग है और उसके ऊपर जिस डाल पर शिकारी बैठा है, वहीं उसका जल-पात्र भी है। रात भर जब-जब शिकारी हिलता-डुलता है, तब-तब बिल्वपत्र और जल की बूँदे शिवलिंग पर गिरती हैं। अपने इन कृत्यों से अनभिज्ञ, शिकारी भगवान शिव की पूजा-अर्चना कर रहा होता है। रात बीतने के साथ-साथ, शिकारी की पूजा भी अनजाने में ही चलती रहती है। सुबह होने तक उसका हृदय करुणा से भर गया होता है; शिकार करने की उसकी इच्छा ही अब समाप्त हो जाती है।

मुझे यह कहानी बहुत पसन्द है, और मुझे इस कहानी के अर्थ पर मनन करना भी बहुत पसन्द है। मेरे मन में हमेशा यह विचार आता है कि भले ही शिकारी अपने द्वारा किए गए कृत्यों से अनभिज्ञ था, फिर भी भगवान शिव अपनी असीम अनुकम्पा से शिकारी के हृदय को शुद्ध कर देते हैं। मेरे लिए इसका अर्थ यह है कि भगवान सदैव विद्यमान हैं और वे हमेशा हमारे हृदय की स्थिति को जानते हैं, भले ही हम अपने हृदय की स्थिति से अनभिज्ञ हों। इस विचार से मुझे बहुत सुख मिलता है।

इस स्तोत्र के समापन पर आदि शंकराचार्य कहते हैं कि जो भी इस स्तोत्र को गाएगा, वह भगवान शिव के लोक को प्राप्त होगा। और शिव का लोक क्या है? इस विषय में शिवलिंग हमें एक संकेत देता है। भगवान शिव का लोक समस्त सृष्टि का निर्गुण, निराकार व अनन्त स्रोत है, वह स्थिति है जिससे सभी कुछ उत्पन्न होता है और जिसमें पुनः सब कुछ समा जाता है।

एक बार, मुझे भारत के गणेशपुरी गाँव में स्थित सिद्धयोग आश्रम, गुरुदेव सिद्धपीठ में काफ़ी समय बिताने का अवसर मिला। हर शाम सेवा के बाद, मुझे आश्रम के ऊपरी बगीचों में स्थित शिवमन्दिर

की ओर एक खिंचाव-सा महसूस होता। सफ़ेद संगमरमर से बने इस मन्दिर में काले संगमरमर से निर्मित शिवलिंग प्रतिष्ठित है। प्रणाम करने और फूल अर्पित करने के बाद, मैं एक कोने में बैठकर शिवलिंग को निहारती रहती। यह समय जादुई-सा लगता। मेरा मन बिलकुल शान्त हो जाता, ऐसी मोहक प्रशान्ति में लीन हो जाता जो समय के परे होती। इस प्रकार मुझे लगता कि मैं शिवलोक में प्रवेश कर रही हूँ।

सिद्धयोग पथ पर हम भगवान शिव की आराधना उस परम चिति के रूप में करते हैं जो हममें से हरेक के अन्तर में विद्यमान है और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। बिल्वाष्टकम् के पाठ जैसी यह शिवार्चना करते समय हम परम चिति के साथ ऐक्य की अनुभूति कर सकते हैं और यह अनुभूति कर सकते हैं कि हमारा अपना ही हृदय भगवान शिव का लोक है।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।